E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सिंधिया राजाओं के ग्वालियर किला टकसाला से जारी सिक्के एक ऐतिहासिक अध्ययन

संदीप सिंह
इतिहास विभाग चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय जीन्द

Paper Received date

05/01/2026

Paper date Publishing Date

10/01/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.18600904

IMPACT FACTOR 5.924

शोध सार-

इस शोध पत्र में ग्वालियर किले की टकशाला से सिंधिया राजाओं द्वारा जारी सिक्कों का वर्णन है। ये सिक्के विभिन्न राजाओं द्वारा समय-समय पर ग्वालियर के किले वाली टकशाला से नाये जाते रहे हैं। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उन सिक्कों की क्या विशेषता रही। इस पर शोध पत्र लिखना है।

मुख्य शब्द: -

टकशाल, परिवर्तनकारी चुनौतीपूर्ण, जनहानि पराक्रम निष्ठापूर्ण, राजवंश एवं चिन्हित । अफगान नेता अहमदशाह अब्दाली और मराठो ने 14 जनवरी 1761 को लड़ा गया पानीपत का तृतीय युद्ध के परिणाम धन-जन की हानि के साथ-साथ कई दृष्टियों से परिवर्तनकारी, चुनौतीपूर्ण एवं मराठों की साख पर प्रहार करने वाला रहा।

भौगोलिक स्थिति-

26 हजार 397 वर्गमील के क्षेत्रफल में फैली ग्वालियर रियासत 23030 तथा 26049 उत्तरी अक्षांश और 7606 तथा 79038 पूर्वी देशान्तर रेखाओं के बीच स्थित रही है। 2 रियासत में ग्वालियर गिर्द, भिण्ड, तँवरघार, श्योपुर, नरवर, ईसागढ़, भेलसा, शाजापुर, मन्दसौर, उज्जैन, अमझेरा के जिले शामिल थे। सिंधिया राजाओं द्वारा अपने-अपने शासन काल में अपने नाम से अथवा मुगल शासकों के नाम युक्त किन्तु मराठा प्रभुत्व को दर्शाने के उद्देश्य से टकसाल चिन्ह के रूप में विशिष्ट पहचान चिन्ह सहित सिक्के ढाले जाने के उल्लेख एवं

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रमाण मिलते हैं। सिंधिया राजाओं के राज्यकाल में अजमेर, बजरंगढ़, बासौदा, भिलसा, भड़ौच, बुरहानपुर, चन्देरी, गढ़ाकोटा, ग्वालियर किला, ईसागढ़, जावद, लश्कर, नरवर, दौलतगढ़, श्योपुर, शाडौरा, सीपरी उज्जैन आदि टकसालों का उल्लेख मिलता है।' प्रस्तुत शोध पत्र सिंधिया राजाओं द्वारा ग्वालियर किला टकसाल से ढलवाये गए सिक्कों पर केन्द्रित है। सिंधिया कालीन ग्वालियर किला टकसाल से ढलवाये गए सिक्कों पर केन्द्रित है। सिंधिया कालीन ग्वालियर किला टकसाल की तथा यहाँ से ढाले गए सिक्कों की क्या विशिष्टता रही ? इसे चिन्हित करना शोध पत्र का मूल उद्देश्य है।

सिक्कों की धातु एवं वजन

इस काल में ढाले गए सिक्कों में प्रयुक्त धातु की बात करें तो स्वर्ण, रजत और ताँबा धातु के प्रयुक्त किए जाने के उल्लेख एवं प्रमाण मिलते है। सोने की मोहरें, एक तिहाई मोहरें, चाँदी का 1 रुपया, 2 रुपया, अठन्नी, चवन्नी दुअन्नी इकन्नी के सिक्कों के ढाले जाने एवं प्रयोग में आने के प्रमाण मिलते है। इसी तरह ताँबे की धातु से अधन्ना, पैसा और धेला के ढाले जाने के प्रमाण मिलते है। ग्वालियर किला टकसाल से ढाले गये विवेच्यकाल के सिक्कों का वजन की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो सिक्कों में प्रयुक्त धातु का वजन घटता-बढ़ता दिखाई देता है। उदाहरण के लिए महादजी के समय चाँदी के 1 रुपया का वजन 10.70-11.60 ग्राम मानक था। दौलतराव सिंधिया के समय 1 रुपये का वजन 10.60 से 11.60 रहा है। बैजाबाई के रोजेण्ट काल में 10.40 से 11.50 तक रुपये का वजन रहा। जनकोजी के काल में रुपये के चांदी के सिक्के का वजन 10.70 से 11.60 तक और जयाजी सिंधिया के काल में 10. 70 से 11.60 ग्राम तक रहा। इसी तरह अन्य सिक्कों के वजन में भी उतार-चढ़ाव परिलक्षित होता है।

महादजी सिंधिया द्वारा जारी सिक्के सन् 1765-1794

महादजी सिंधिया ने ग्वालियर टकसाल से जारी होने वाले सिक्कों में एकाएक कोई परिवर्तन नहीं किया। किन्तु बाद के 15 वर्ष के सिक्कों में दो परिवर्तन किए (1) पूर्व के (मुगलकाल) सिक्कों से आकार में छोटे सिक्के ढाले जाने की शुरूआत। (2) सिक्कों के सीधी और पाँच पंखुड़ी के फुल वाली टहनी की आकृति का अंकन ।

महादजी सिंधिया के शासनकाल के 22 वें वर्ष में सन् 1781 में ग्वालियर टकसाल से ढाले जाने वाले सिक्कों पर उल्टी और पुनः एक नया चिन्ह - कटार या मूंठ वाली तलवार अंकित करवाई। इस कटारयुक्त चिन्ह के सिक्के वाद के आने वाले सिंधिया राजाओं के सिक्कों में भी देखने को मिलते हैं। वस्तुतः पाँच पंखुड़ी वाली फुल की टहनी, मूंठ वाली कटार, ये ग्वालियर किला टकसाल का मूल पहचान चिन्ह रहा। यही वजह है कि बाद के आने वाले

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

सिंधिया राजाओं द्वारा ग्वालियर किला टकसाल से जारी सिक्कों में टकसाल का मूल पहचान चिन्ह अंकित मिलता है इसके अतिरिक्त कुछ नए चिन्ह भी आगामी शासकों के शासनकाल में जुड़ने लगे । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पाँच पंखुड़ी वाली फूल की टहनी और कटार का चिन्ह चाँदी के सिक्कों में तथा ताँबे के सिक्कों में एक ओर मूंठ वाली कटार तथा दूसरी ओर तीन पंखुड़ी का अंकन मिलता है, संभवतः यह साँचे की असमानता को दर्शाता है।

ग्वालियर किला टकसाल से ढाले गए उपलब्ध एवं प्राप्त सिक्कों के अध्ययन अवलोकन के आधार निम्नलिखित विशिष्टता दिखाई पड़ती है जिसे सिंधिया राजाओं के क्रमानुसार स्पष्ट करना यथोचित है।

महादजी सिंधिया द्वारा ग्वालियर टकसाल के सिक्कों में से एक रुपया' चाँदी का प्राप्त हुआ है। इस सिक्के में सीधी और पाँच पंखुड़ी वाली फूल की टहनी के साथ पर्शियन लिपि में मुहम्मद अफजल उल्लाह हाफिज उल्लिखित है जो कि फजले एलाए की लम्बी पंक्ति का कुछ अंश है। जबकि दूसरी ओर पुन पर्शियन में 31 वर्ष अंकित है। यह 31 वर्ष मुगलबादशाह शहाअलम द्वितीय सन् 1759-1806 के राज्यारोहण के 31वें वर्ष का सूचक है। सन् 1790 में महादजी सिंधिया ने मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय की आधीनता को स्वीकार करते हुए सन् 1790 में ग्वालियर टकसाल से यह सिक्का जारी किया। इस सिक्के में ग्वालियर किला टकसाल के सभी चिन्ह दर्शित है।

महादजी सिंधिया के शासनकाल का ही उपलब्ध प्राप्त ताँबा धातु का 'एक पैसा' मे टकसाल चिन्ह के रूप में मूठ वाली कटार दर्शित है। इसमें पर्शियन लिपि में HALOKO लिखा है। महादजी सिंधिया द्वारा ग्वालियर टकसाल से जारी मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय के राज्यारोहण के चाँदी के सिक्के 'एक रुपया' तथा ताँबे के पैसे एक पैसा जारी करने के उल्लेख मिलते है।

दौलत राव सिंधिया द्वारा जारी सिक्के सन् 1794-1827

दौलतराव सिंधिया सन् 1794 1827 द्वारा ग्वालियर किला टकसाल से जारी किए गए सिक्कों में एक रुपया-चाँदी का 1 पैसा ताँबा का मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय के नाम तथा ताँबा का एक पैसा जारी किया जाने का उल्लेख मिलता है। इसी तरह चाँदी का 4 आना, S आना 1228 हिजरी का ताँबा का एक रुपया का सिक्का मुगल बादशाह अकबर द्वितीय (1806 1837) के नाम से ढाले जाने के उल्लेख मिलते है। इसके अतिरिक्त मुगल बादशाह अकबर द्वितीय के नाम युक्त सिक्के ताँबे के 'एक रुपया' डाले जाने के उल्लेख मिलते है। इस शासनावधि में ग्वालियर किला टकसाल से सोने की मोहर ढाला जाना प्रमाणित है। इस मोहर में मुहम्मद शाह का नाम अंकित है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

दौलतराव सिंधिया को शासनावधि में जारी एक रुपया' चाँदी को प्राप्त हुआ है। इस सिक्के में ग्वालियर टकसाल का पहचान चिन्ह-5 पंखुड़ी वाले फूल की टहनी, पर्शियन लेख - फजले एलाए का कुछ अंश, सीधी और दृष्टव्य है। सिक्के के दूसरी ओर मूंठ वाली कटार स्पष्ट रूप से दर्शित है। साथ ही एक 5 पंखुड़ी वाला फूल जो कि दौलतराव सिंधिया के समय के यह मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय के नाम सन् 1797 में ढाला गया सिक्का है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि दौलतराव सिंधिया ने ग्वालियर किला टकसाल के पहचान चिन्ह के साथ सिक्के के दूसरी ओर पाँच कली का फूल तथा 1229 हिजरी के बाद के चाँदी के चार आना, आठ आना, रुपया तथा तांबा के रुपया में भी पांच कली के फूल की टहनी से जुड़ी हुई तीन बिंदियों युक्त टहनी अंकित करवाई, जो कि इस काल के सिक्कों में तथा बाद के सिक्कों में भी देखने को मिलती है।

बायजाबाई सिंधिया द्वारा जारी सिक्के सन् 1827 1831

दौलतराव सिंधिया की मृत्यु के उपरान्त उत्तराधिकारी के प्रश्न को लेकर कुछ समय तक विवाद की स्थिति रही। अंततः बायजाबाई, जनकोजीराव की रीजेन्ट (संरक्षक) के रूप में शासक रहीं। दौलतराव सिंधिया की मृत्यु के बाद सन् 1828 में ग्वालियर किला टकसाल से पहला सिक्का ढाला गया। जिसमें उन्होंने अपना संकेत चिन्ह 'श्री' का अंकन करवाया। ग्वालियर किला टकसाल से ढाले गए केवल चांदी के सिक्कों (रुपया) में 'श्री' का अंकन मिलता है, ताँबे के सिक्कों (पैसा) में नहीं। इसके अतिरिक्त ग्वालियर किला टकसाल के पहचान चिन्ह पाँच पंखुड़ी वाली फूल की टहनी, मूंठ वाली कटार की आकृति यथावत् मिलती है। इस टकसाल 'श्री' चिन्ह के साथ मुहम्मदशाह के नाम से बायजाबाई द्वारा जारी एक तिहाई मोहर सोने की ढाली गई। इसके अतिरिक्त चाँदी का रुपया ताँबा का 1 पैसा ढाले जाने के उल्लेख मिलते हैं। चाँदी के प्राप्य सिकं, 1 रुपया में टकसाल का पहचान चिन्ह 5 पंखुड़ी वाले फूल की टहनी के साथ जुड़ी हुई तीन बिंदियों युक्त छोटी टहनी तथा दूसरी ओर पर्शियन लेख के साथ 'श्री' का अंकन है और उसके नीचे 5 पंखुड़ी का गोल फूल अंकित है साथ ही मूंठ वाली कटार भी दर्शित है। इसमें मुगल बादशाह 'मुहम्मद अकबर' द्वितीय सन् 1806 - 1837 का नाम अंकित है।' अर्थात् यह सिक्का ग्वालियर किला टकसाल से सन् 1829 का ढाला गया सिक्का प्राप्य है।

बैजाबाई के शासनवधि में ग्वालियर किला टकसाल से जारी ताँबा धातु का सिक्का एक पैसा प्राप्त हुआ है। यह आकार में छोटा है। इसमें ग्वालियर किला टकसाल का चिन्ह मात्र एक-मूंठ वाली कटार दिखाई दे रही है। इसमें पर्शियन लिपि में LAHAD उल्लिखित है। "

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ग्वालियर किला टकसाल में ढाला गया एक अन्य ताँबा का 1 पैसा मिला है। यह देखने में पर्णतः गोल नहीं है। आकार में छोटा है। मुगल बादशाह मुहम्मद अकबर द्वितीय के राज्यारोहण के सन् 1830 में ढाला गया है। इसमें टकसाल चिन्ह-मूंठ वाली कटार दर्शित है।

जनकोजीराव सिंधिया द्वारा जारी सिक्के सन् 1833-43

जनकोजीराव सिंधिया द्वारा ग्वालियर किला टकसाल से जारी किए गए सिक्कों में 1 रुपया-चाँदी का, चार आना चाँदी का, आठ आना चाँदी का, दो आना चाँदी का मोहर सोना, तिहाई मोहर- स्वर्ण से ढाले जाने के उल्लेख मिलते है। 1 रुपया सन् 1829 में मुहम्मद अकबर द्वितीय के नाम से ढाला गया। 4 आना, 8 आना, राज्यारोहण वर्ष में ढाले जाने के उल्लेख मिलते हैं। मोहर पूर्व पंरपरानुसार मुगल बादशाह मोहम्मदशाह के नाम से और एक तिहाई मोहर भी मुगल बादशाह मोहम्मदशाह के नाम से ढाली गई।

जनकोजी राव के समय ग्वालियर टकसाल से जारी किए गए सिक्के पूर्ववर्ती सिंधिया शासकों की ही प्रतिकृति थे। इन सिक्कों में जो नया टकसाल चिन्ह जोड़ा गया वह था देवनागरी लिपि में 'ज' अथवा 'जे' के अंकन के साथ 'धनुषवाण' का अंकन । धनुषवाण का अंकन भी सिक्कों में दो प्रकार से मिलता है। पहले प्रकार के सिक्कों में चार आना, आठ आना, दो आना, 1 रुपया, और मोहर एवं तिहाई मोहर में धनुषबाण ऊपर की ओर मुखोन्मुख है। जबकि दूसरे प्रकार के सिक्कों चार आना, आठ आना, रुपया के सिक्कों में धनुषबाण का मुख नीचे की ओर अंकित है। इसी तरह मोहर एवं एक तिहाई मोहर में भी ऐसा ही अंकन देखने को मिलता है। अंकित है। इसी तरह मोहर एवं एक तिहाई मोहर में भी ऐसा ही अंकन देखने को मिलता है। इस काल में जारी 8 आना और एक रुपया के सिक्कों में 'ज' अथवा 'जे' के स्थान पर उर्दू में '६' के अंकन के साथ धनुपबाण नीचे की ओर मुख किए हुए अंकित मिलता है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित होगा, कि जनकोजी राव के समय ढाले गए सिक्कों में भले ही नये चिन्ह डाले गए। किन्तु ग्वालियर किला टकसाल के पूर्ववर्ती चिन्ह इस काल के सिक्कों पर यथावत् देखने को मिलते है। मगर फर्क बस इतना आया कि इस काल के सिक्के, साँचों के वास्तविक आकार से छोटे वाले गए। जिसके कारण न तो पूरा लेख और ना ही पूरा ग्वालियर किला टकमाल की पहचान चिन्ह पूर्णत: दिखाई देता है । किन्ही सिक्कों में सिक्कों के सीधी ओर अंकित होने वाला पूर्ण चिन्ह पाँच पंखुड़ी वाले फूल की टहनी के साथ जुड़ी हुई तीन बिंदियों युक्त छोटी टहनी आड़े में प्रदर्शित है। पाँच पंखुड़ी का फूल आधा दिखाई पड़ता है। मूंठ वाली कटार भी किन्हीं सिक्कों में अदश्य है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जनकोजीराव सिंधिया के शासनकाल में इस टकसाल से

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ताँबे के सिक्के ढाले जाने के प्रमाण नहीं मिलते। जयाजीराव सिंधिया द्वारा जारी सिक्के सन् 1843-1886,

जयाजीराव सिंधिया के शासनकाल में ग्वालियर किला टकसाल से जारी सिक्कों में मोहर एवं एक तिहाई मोहर स्वर्ण धातु की मुगल बादशाह मोहम्मदशाह के नाम से 'जी' वर्ण के अंकन के साथ ढाला गया। इसके अतिरिक्त चाँदी का आठ आना, चार आना, दो आना, एक आना, ढाले जाने के साक्ष्य मिलते है। इसी तरह ताँबा का 1 पैसा ढाले जाने के उल्लेख मिलते हैं। जयाजीराव के इस टकसाल से जारी किए गए सिक्के पूर्ववर्ती राजाओं के सिक्कों की ही प्रतिकृति थे फर्क केवल इतना था कि इस काल के सिककों पर देवनागरी लिपि के 'ज' अथवा 'जे' के स्थान पर 'जी' का अंकन अर्थात् एक नये चिन्ह 'जी' ग्वालियर किला टकसाल पहचान चिन्ह में शामिल किया गया। इसके साथ ही पूर्ववर्ती टकसाल चिन्ह पाँच पंखुड़ी वाला फूल की टहनी के साथ जुड़ी हुई तीन बिंदियों युक्त छोटी टहनी आड़े में, मूंठ वाली कटार, धनुषबाण के दोनों रूपों में से कोई एक पर्शियन लेख सोने की मोहर में एक तिहाई मोहर में, रुपया, रुपया, आठ आना, चार आना, दो आना, एक आना के सिक्कों में स्पष्ट दिखाई देता है। ताँबा है। के पैसा में मूंठ वाली कटार और पर्शियन लेख नही दिखाई पड़ता है।[10]

जयाजीराव के सन् 1882 के ब्रिटिश सरकार के एक आदेश के तहत राज्य की राजधाना की टकसालों को छोड़कर शेष टकसालों को बंद करने के आदेश जारी हुए। जिसके परिपालन में अन्य टकसालों के साथ ग्वालियर किला स्थित टकसाल जयाजीराव के शासन के अंतिम दिनों में बंद हो गई। केवल लश्कर टकसाल जारी हो मशीनीकृत टकसाल के रूप में क्रियान्वित हुई। इस तरह ग्वालियर किला टकसाल से आखिरी बार जयाजीराव के सयम सिक्के ढाले गए। बाद के सिंधिया राजाओं माधवराव पाव आणा एवं पाव आना के सिक्के लश्कर टकसाल से जारी हुए। वह भी आधा पैसा, ताँबा युक्त, आधा आना ताँबा, पाव आना ढालने की वैधानिक पात्रता थी। शेष एक आना, दो आना, चार आना, आठ आना, रुपया सभी चाँदी के सिक्के ब्रिटिश सरकार द्वारा ढाले गये।

निष्कर्ष

इस तरह ग्वालियर किला टकसाल से ढाले गए सिंधिया राजाओं के सिक्कों का अध्ययन अवलोकन करने के उपरान्त कहा जा सकता है कि

1. इस काल में सिक्के साँचों की मदद से हाथ से बनाये जाते थे। सिक्कों को ढालने के लिए प्रयोग में लाने वाले साँचे एक से आकार - प्रकार के नहीं थे जिसके प्रमाण में एक राजा के समय ढाले गए सिक्के आकार-प्रकार में एक दूसरे से मेल नहीं खाते।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2. इसी तरह सिक्कों के वजन की तालिका में बार-बार परिवर्तन दिखाई देता है जो सिंधिया राजाओं की इस सम्बन्ध में अस्पष्ट नीति को दर्शाता है।

3. सिक्कों को ढालने वाले वर्ष का संकेत देने के लिए मुगल बादशाहों के राज्यारोहण वर्ष का अंकन के साथ बादशाह का नाम अथवा फजले एलाए का अंकन ये बताता है कि सिंधिया राजा अपनी स्वामी भक्ति के साथ मुगलों के आधिपत्य को स्वीकार करते थे। मगर टकसाल चिन्ह अंकित करके अपने अस्तित्व को भी बनाये रखने में वे सफल रहे। जनकोजी, जयाजीराव सिंधिया ने तो एक कदम आगे बढ़कर अपने नाम का संकेत वर्णन अंकित कराने में कोई संकोच नहीं किया।

संदर्भ-

1. पानीपत के तृतीय युद्ध की तिथि 7 जनवरी 1761 उल्लिखित है।
2. मध्यप्रदेश पूर्व ग्वालियर गजेटियर, पृ. 1 राजभाषा संस्कृति संचालनालय म.प्र. शासन भोपाल 1996
3. दरवार पॉलिसी ग्वालियर स्टेट वाल्यूम - 1, 1925, पृ. 618
4. माहेश्वरी एच. बी. : ग्वालियर इतिहास संस्कृति एवं पर्यटन, 2008, पृ. 65
5. ग्वालियर किला टकसाल से प्राप्त सिक्कों के अध्ययन अवलोकन एवं तुलनात्मक माप तालिका के अनुसार एवं ग्वालियर के सुनारों से हुई बातचीत के अनुसार
6. माहेश्वरी, एच.बी.: ग्वालियर राज्य के सिक्के, 2008, पृ. 34-35
7. सिक्कों के अध्ययन अवलोकन के अनुसार एवं साउथ एशिया कॉइन्स, ग्वालियर इण्डियन प्रिन्सली स्टेट, पृ. 165
8. प्राप्य सिक्कों के अवलोकनानुसार एवं पर्शियन लिपि के जानकार के अनुसार ।
9. साउथ एशिया कॉइन्स, ग्वालियर इण्डियन प्रिन्सली स्टेट, पृ. 166
10. प्राप्य चाँदी का सिक्का (रुपया) के अनुसार ग्वालियर किला टकसाल से जारी जयाजीराव के शासन काल में